रात्रिक्लास 23.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

सदैव गुण ही ग्रहण करना चाहिए। इसको कहा जाता है गुण–ग्राहक। इसमें भी मुख्य गुण ग्रहण करना है। ऊँच ते ऊँच बाप है। वह तो मीठा लवली अक्षर है। गॉडफादर कहना ठीक है। ईश्वर, प्रभु, भगवान से भी फादर अक्षर ठीक है। फादर है तो सिद्ध है वर्सा ज़रूर देना होगा। रचयिता है तो नई दुनियां ही रचेंगे। नई दुनियां है यह। गॉडफादर ज़रूर गॉड–गॉडेज़ ही बनावेंगे। प्रवृत्तिमार्ग है ना। भगवान, भगवान–भगवती कैसे बनाते हैं? खुद यहां आकर बनाते हैं। उन्हों को कहा जाता है। देवी–देवता। गॉड की रचना है ; इसलिए गॉड, गॉडेज़ कहा जाता है। वास्तव में होते हैं देवी–देवताएं। आदि सनातन देवी–देवता धर्म स्थापन करते हैं। देवी–देवता घराणे का जो ऊँच है उनको कहा जाता है महाराजा–महारानी। कहते हैं मैं तुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूं। जिनको पवित्रता का ताज नहीं वह पतित ही ठहरे। सूर्यवंशी हैं डबल सिरताज पावन। बाप कहते हैं पतित महाराजाओं का भी महाराजा बनाता हूं। मुझे याद करने से तुम पावन बन लायक बनेंगे। फिर पुनर्जन्म लेते–2 पतित बनते हैं। जो भी आते–जाते हैं एडीशन होते जाते हैं। मैक्सीसम और मिनीमम। 84 लाख तो हो भी न सके। तो मुख्य सबसे फर्स्ट क्लास चीज़ है बेहद के बाप को याद करना तो अंत मते सो गति हो जावेगी। याद करते–2 बाप के पास परमधाम पहुँच जावेंगे। भक्ति करते हैं परमधाम जाने लिए। परमधाम मुक्ति को भी कहेंगे तो जीवन मुक्ति को भी कहेंगे। द्वापर/कलियुग को तो परमधाम नहीं कहेंगे। रावण राज्य होता है ना। परमधाम है स्वर्ग फिर त्रेता। फिर होता है रावण राज्य। बाप को कब भूलना न चाहिए; क्योंकि याद से पाप कटते हैं। बाप आते हैं ही शान्तिधाम सुखधाम बेहद का वर्सा देने। सतयुग आदि से त्रेता अंत तक वह वर्सा चलता है। फिर लौकिक बाप से हद का वर्सा मिलता है। वहां मोहजीत होते हैं। यहां मोह रहता है। थोड़ी भी बात समझने से बेहद का सुख–शान्ति मिला था। अभी नहीं है सो फिर मिलती है। सतयुग था, अभी है कलियुग। फिर सतयुग लायक बनने लिए यह संगमयुग है। दो/चार बातें धारण हो जायें तो भी बेड़ा पार है। खिवैया बागवान भी उनको कहा जाता है। वह है फूलों का बगीचा। फिर रावण कांटों का जंगल कर देते हैं। काम को जीतने से तुम 21 जन्म जगतजीत बनेंगे। बेहद के बाप का प्यार भी बेहद का है। सभी को सुख देते हैं। सर्व की सद्गति करते हैं। दुःख हर कर सुख देते हैं। तो ऐसे बाप को क्यों नहीं याद करें? यह है सहज याद, सहज ज्ञान। बाकी भूल जाना चाहिए। बीती सो बीती देखो दुनियां न जीती देखो। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग बीतती गई ना। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग बीता। बाकी दुनियां के लिए कलियुग अजन नहीं बीता है। बाप कहते हैं बीती को बीती देखो पुरानी दुनियां न जीती देखो। क्या बीती है वह भी सभी बता देते हैं। सुख भी बिताया, दुःख की(भी) बिताया। अभी फिर सुखधाम चलना है। ऊँच ते ऊँच बाप पढ़ाते हैं। बाकी रचना से वर्सा नहीं मिलता है। हद का रचना तो हद का वर्सा। बाप आकर माया रावण के गुलामगिरी से छुड़ाते हैं। इस समय सभी रावण के गुलाम हैं। फिर बाप आकर उनको छुड़ाते हैं। बाप कहते हैं मैंने तुमको इतना सॉलवेन्ट विश्व का मालिक बनाया फिर यह भी कहां गंवाया? नीचे उतरते–2 तुम इनसॉलवेन्ट बन पड़े हो। 100% सॉलवेन्ट से 100% इनसॉलवेन्ट भिखारी बन पड़े हो। फिर बाप तुमको सॉलवेन्ट बनाते हैं। बाप ही संगमयुग पर आकर डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं। सभी की सद्गति करते हैं। बाकी और धर्म स्थापक तो कुछ भी नहीं जानते। वह कोई गुरू थोड़े ही हैं। यह तो फालतू बड़ाई दे दी है। वह बाप ही ज्ञान सागर है। कृष्ण तो ज्ञान का सागर हो न सके। कृष्ण के भक्त तो कहेंगे जिधर देखता हूं कृष्ण ही कृष्ण है। कोई कहेंगे जिधर देखता हूं राम ही राम है। अंधेर नगरी.....सभी में ईश्वर ही ईश्वर है। बाप कहते हैं मैं तुमको इतना ऊँच बनाता हूं। माया तुमको एकदम ....चैप्स बना देती है। आसुरी सम्प्रदाय से हम तुमको दैवी सम्प्रदाय बनाता हूं। अभी देहीअभिमानी बनो। मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। तो मेरी मत पर चलना पड़े। अच्छा बच्चों, गुडनाइट। नमस्ते।